उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति शिक्षकों के अभिमतों का अध्ययन

लकी चौबीसा
शोधकर्त्री
डॉ. हरीश चन्द्र चौबीसा
शोध मार्गदर्शिक
शिक्षा संकाय
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय), उदयपुर(राज.)

प्रस्तावना :

भारत सरकार लगातार देश के अलग–अलग सेक्टर के विकास के लिए महत्वपूर्ण कदम उठा रही है और अच्छी से अच्छी योजना चला रही है। सरकार के द्वारा अब शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करने के लिए प्रधानमंत्री श्री योजना का शुभारंभ कर दिया गया है। इस योजना का शुभारंभ सरकार के द्वारा देश के बच्चों के बेहतर भविष्य की बुनियाद को मजबूत बनाने के लिए किया गया है। सरकार के द्वारा इस योजना का शुभारंभ देश में शिक्षक दिवस के मौके पर किया गया है।

भारत में सरकार द्वारा प्रायोजित सामाजिक कल्याण योजनाएं देश के शैक्षिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिसका उद्देश्य सामाजिक–आर्थिक असमानताओं को पाटना और सभी नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के समान अवसर प्रदान करना है। इन योजनाओं को शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करने, प्रतिधारण को बढ़ावा देने और समग्र शैक्षिक अनुभव को बढ़ाकर समाज के हाशिए पर और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए डिजाइन किया गया है। भारत में सामाजिक कल्याण शैक्षिक योजनाओं को लागू करने से समग्र शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने और सभी नागरिकों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुंच सुनिश्चित करने के उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण उद्देश्य पूरे हो सकते हैं।

केन्द्र सरकार ने देश के भविष्य यानी स्कूली बच्चों की बुनियाद को पहले से ज्यादा मजबूत बनाने की दिशा में एक बेहतर कदम उठाया है. सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में एक बड़ा बदलाव किया है. जिसके तहत देशभर में लगभग 14 हजार 500 स्कूलों को पीएम श्री योजना यानी (प्रधानमंत्री स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया) के तहत अपग्रेड किया जाएगा।

इस योजना के तहत 14500 स्कूलों को अपग्रेड करने में आने वाले खर्च को केंद्र सरकार वहन करेगी और राज्य सरकार को इस योजना पर अमल करने एवं निगरानी करने की जिम्मेदारी दी जाएगी। इस योजना के तहत अपग्रेड किए गए स्कूल के माध्यम से सामान्य लोगों के बच्चों को अच्छी शिक्षा प्राप्त करने का मौका मिलेगा। जिससे उनका भविष्य निखरेगा और वह भी शिक्षित होकर भारत के विकास में अपनी भागीदारी निभा सकेंगे।

शोध परिकल्पना :

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्नलिखित शोध परिकल्पनाएं निर्धारित की गयी हैं–

1. पी.एम.श्री स्कूल योजना के प्रति उदयपुर एवं बांसवाड़ा सम्भाग के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के अभिमतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमन :

इस अध्ययन का उद्देश्य पी.एम. श्री की व्यापक समझ प्रदान करना है। पी.एम.श्री योजना, इसका कार्यान्वयन, हितधारकों की राय और संबंधित चुनौतियाँ, कुछ सीमाओं को स्वीकार करने की आवश्यकता है। ये सीमाएँ निष्कर्षों की सामान्यता और गहराई को प्रभावित कर सकती हैं, और परिणामों की व्याख्या करते समय इन्हें ध्यान में रखा जाना चाहिए। प्रस्तुत शोध कार्य का परिसीमन निम्नानुसार है–

1. **भौगोलिक दृश्टि से** : प्रस्तुत शोध अध्ययन को राजस्थान राज्य के उदयपुर व बांसवाड़ा सम्भाग तक ही सीमित रखा जाएगा।
2. **अध्ययन की दृश्टि से** : प्रस्तुत शोध अध्ययन जो विद्यालय पी.एम.श्री स्कूल योजना के विद्यालय बन चुके हैं उन विद्यालयों के प्रमुख मुद्दों तक ही सीमित रखा जाएगा।

अध्ययन का औचित्य :

''पी.एम.श्री स्कूल योजना की वस्तुस्थिति, क्रियान्वयन एवं अनुभूत समस्याओं का अध्ययन'' पर केंद्रित शोध सामाजिक कल्याण और शिक्षा के क्षेत्र में गहरा महत्व रखता है। शैक्षिक पहलुओं के माध्यम से वंचित व्यक्तियों को सशक्त बनाने और उत्थान करने के लिए बनाई गई यह योजना, इसके कार्यान्वयन प्रभावशीलता के व्यापक मूल्यांकन की गारंटी देती है। योजना की वर्तमान स्थिति की जांच करना, जमीन पर इसकी तैनाती को समझना, हितधारकों के दृष्टिकोण को समझना और आने वाली चुनौतियों की पहचान करना इसके प्रभाव को बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। लाभार्थियों, प्रशासकों और अन्य हितधारकों के अनुभवों और राय को ध्यान में रखते हुए, यह शोध अपने इच्छित उद्देश्यों को प्राप्त करने में योजना की सफलता का आकलन करने में सहायता करता है।

यह न केवल उन क्षेत्रों पर प्रकाश डालता है जहां योजना ने सकारात्मक प्रगति की है बल्कि संभावित कमियों या बाधाओं पर भी प्रकाश डाला है जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। अंततः, यह शोध नीति परिशोधन के लिए एक मार्गदर्शक कम्पास के रूप में कार्य करता है, यह सुनिश्चित करता है कि पी. एम. श्री योजना सकारात्मक शैक्षिक एवं सामाजिक परिवर्तन को उत्प्रेरित करने और सभी के लिए समान शैक्षिक अवसरों को बढ़ावा देने की अपनी क्षमता को अधिकतम करती है।

शोध विधि एवं उपकरण :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा। क्योंकि इस अध्ययन के लिए यह विधि सर्वोत्तम एवं उपयुक्त है। शोध विषय की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए ही इस विधि का प्रयोग किया जाएगा।

शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा जो इस प्रकार है।

1. अभिधारकों (प्रधानाध्यापक, शिक्षक, विद्यार्थी) के लिए प्रमापनी (अभिमतावली)

तकनीकी शब्दों की व्याख्या :

1. **पी.एम.श्री योजना** : हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने पुराने स्कूलों को एक नया स्वरूप देने एवं बच्चों को स्मार्ट शिक्षा से जोड़ने के लिए एक नई योजना को शुरू करने की घोषणा की है। इस योजना का नाम पी.एम.श्री स्कूल योजना है। जिसे शुरू करने की घोषणा प्रधानमंत्री जी ने 5 सितंबर 2022 सोमवार के दिन टीचर्स डे के अवसर पर की। Prime Minister School for Rising India PM SHRI योजना के तहत पूरे भारत में 14500 स्कूलों का विकास और उन्नयन किया जाएगा। यह सभी मॉडल स्कूल बनेंगे और इनमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) की पूरी भावना समाहित होगी।

2. **वस्तुस्थिति** : किसी विषय की स्थापना के उद्देश्यों या उसकी आदर्श स्थिति की जगह जो वास्तविक स्थिति होती है, वह उसकी वस्तुस्थिति कहलाती है।
3. **कियान्वयन** : पी. एम श्री स्कूल योजना का उद्देश्य शिक्षा के लिए सामाजिक कल्याण लाभ प्रदान करना है, इस योजना को विभिन्न क्षेत्रों, स्कूलों और शैक्षिक स्तरों पर किस हद तक प्रभावी ढंग से लागू किया गया है, इसका गहन मूल्यांकन करने में एक शोध अंतर है। इसमें योजना की पहुंच का आकलन करना, कार्यान्वयन में कमियों की पहचान करना और इसके सफल या असफल कार्यान्वयन में योगदान देने वाले कारकों को समझना शामिल है।
4. **अभिमत** : अभिमत किसी वस्तु, व्यक्ति या विषय के सम्बन्ध में सोचने, अनुभव करने तथा व्यवहार करने का तरीका है। ऑक्सफोर्ड शब्दकोश के अनुसार–''किसी विषय–वस्तु या मुद्दों के बारे में कोई क्या सोचता है, वहीं अभिमत कहलाता है।'' इसका अर्थ है किसी विषय वस्तु के प्रति हम क्या सोचते हैं? कैसा अनुभव करते हैं? यही हमारा उसके प्रति अभिमत है। यह सकारात्मक अथवा नकारात्मक दोनों ही प्रकार का हो सकता है।
5. **अभिधारक** : प्रस्तुत शोध कार्य में अभिधारकों से तात्पर्य विद्यार्थी शिक्षक, संस्था प्रधानों एवं अभिभावक से है जो विद्यालय से निरन्तर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहते हैं तथा सदैव विद्यालय विकास हेतु कार्य करते रहते हैं।
6. **अनुभूत समस्या** : प्रस्तुत शोध कार्य में अनुभूत समस्या से तात्पर्य यह है कि पी.एम.श्री स्कूल योजना को व्यवस्थित रूप से क्रियान्वित होने के बाद शिक्षकों, संस्था प्रधानों एवं विद्यार्थियों को कौन–कौनसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु उदयपुर एवं बांसवाड़ा सम्भाग के कुल न्यादर्श 650 लिए गये है जिसमें उदयपुर सम्भाग के 20 विद्यालयों एवं बांसवाड़ा सम्भाग के 20 विद्यालयों का चयन किया जाएगा जो इस प्रकार है–

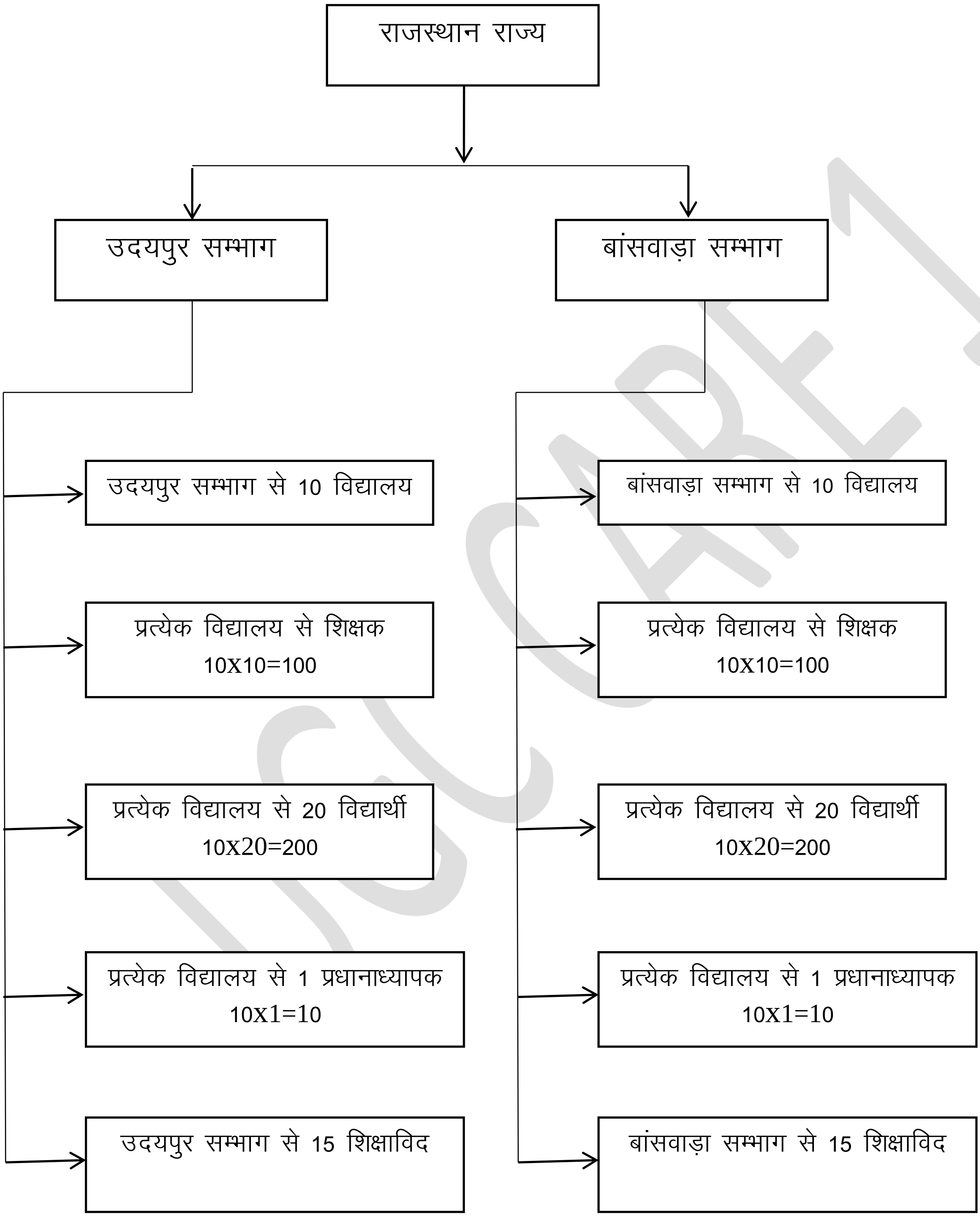

UGC CARE 1

शोध में प्रयुक्त कुल न्यादर्श

क.सं.	समूह प्रकार	उदयपुर सम्भाग	बांसवाड़ा सम्भाग	कुल न्यादर्श
1	शिक्षक	10x10=100	10x10=100	200
2	विद्यार्थी	10x20=200	10x20=200	400
3	प्रधानाध्यापक	10x1=10	10x1=10	20
4	शिक्षाविद	प्रत्येक सम्भाग 15	प्रत्येक सम्भाग 15	30
	कुल	325	325	650

1. विद्यालयों का चयन यादृच्छिक (Random) न्यादर्श चयन विधि से किया जाएगा।
2. शिक्षाकर्मियों/प्रधानाध्यापकों/विद्यार्थियों एवं शिक्षाविदों का चयन सौद्देश्य न्यादर्श चयन विधि से किया जाएगा।

सांख्यिकीय तकनीकी :

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित सांख्यिकीय का प्रयोग किया जाएगा –

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन
3. टी–परीक्षण

4.4.2 उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति शिक्षकों के अभिमतों का अध्ययन करना।

सारणी संख्या–4.8

उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति शिक्षकों के अभिमतों का

मध्यमान एवं मानक विचलन

क्र. सं.	क्षेत्र	मध्यमान	मानक विचलन
1.	योजना के उद्देश्यों की पूर्ति	68.75	8.06
2.	भौतिक एवं मानवीय संसाधन	62.05	7.52
3	विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण	58.60	6.48
4	पर्यवेक्षण, प्रशिक्षण एवं अधिगम संवर्द्धन कार्य	59.15	6.90

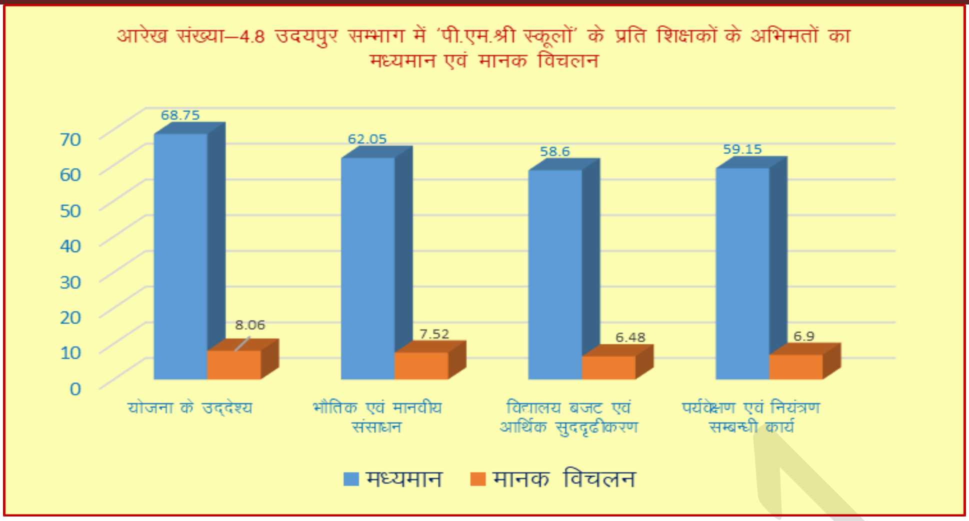

व्याख्या :

उपर्युक्त सारणी एवं आरेख संख्या 4.8 के अवलोकन करने पर क्षेत्रवार विश्लेषण इस प्रकार है –

1. **क्षेत्र–1** योजना के उद्देश्य : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के शिक्षकों के अभिमतों के क्षेत्र 'योजना के उद्देश्य' क्षेत्र का मध्यमान 68.75 एवं मानक विचलन 8.06 प्राप्त हुआ। इससे ज्ञात होता है कि 'योजना के उद्देश्य' क्षेत्र के प्रति अध्यापकों का अभिमत है कि गुणवत्ता शिक्षा हेतु महत्वपूर्ण कदम है, छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करने आधुनिक शिक्षा प्रदान करने व राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुई है।

2. **क्षेत्र–2 भौतिक एवं मानवीय संसाधन** : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के शिक्षकों के अभिमतों के क्षेत्र 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' क्षेत्र का मध्यमान 62.05 एवं मानक विचलन 7.52 प्राप्त हुआ। इससे ज्ञात होता है कि 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' क्षेत्र के प्रति शिक्षकों का अभिमत है कि विद्यार्थियों के अनुपात में सुरक्षित विद्यालय भवन व सुविधायुक्त फर्नीचर की व्यवस्था सम्भव हो सकी है।

3. **क्षेत्र–3 विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण** : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के शिक्षकों के अभिमतों के क्षेत्र 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण' क्षेत्र का मध्यमान 58.60 एवं मानक विचलन 6.48 प्राप्त हुआ। इससे ज्ञात होता है कि 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण' क्षेत्र के प्रति शिक्षकों का अभिमत है कि सत्र के दौरान समय पर आर्थिक बजट की उपलब्धता से विद्यालय के बुनियादी ढांचे जैसे भवन, प्रयोगशालाएं, कम्प्यूटर, फर्नीचर, पानी, बिजली, लेब, खेल मैदान व पुस्तकालयों की सुविधाएं सुनिश्चित हुई।
4. **क्षेत्र–4 पर्यवेक्षण, प्रशिक्षण एवं अधिगम संवर्द्धन कार्य** : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के शिक्षकों के अभिमतों के क्षेत्र 'प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' क्षेत्र का मध्यमान 59.15 एवं मानक विचलन 6.90 प्राप्त हुआ। इससे ज्ञात होता है कि 'पर्यवेक्षण, प्रशिक्षण एवं अधिगम संवर्द्धन कार्य' क्षेत्र के प्रति शिक्षकों का अभिमत है कि प्रभावी शिक्षण हेतु समय–समय पर प्रशिक्षण नियमित रूप में कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। नवीनतम शिक्षण विधियों जैसे इंटरैक्टिव कार्यशालाओं और चर्चाओं के माध्यम से छात्रो का प्रभावी ढग से संलग्न करने के लिए प्रशिक्षण किया जाता है।

4.4.3 बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति शिक्षकों के अभिमतों का अध्ययन करना।

सारणी संख्या–4.9

बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति शिक्षकों के अभिमतों का

मध्यमान एवं मानक विचलन

क्र. सं.	क्षेत्र	मध्यमान	मानक विचलन
1.	योजना के उद्देश्य	58.50	6.82
2.	भौतिक एवं मानवीय संसाधन	57.60	5.98
3	विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण	56.64	6.30
4	पर्यवेक्षण, प्रशिक्षण एवं अधिगम संवर्द्धन कार्य	52.51	5.90

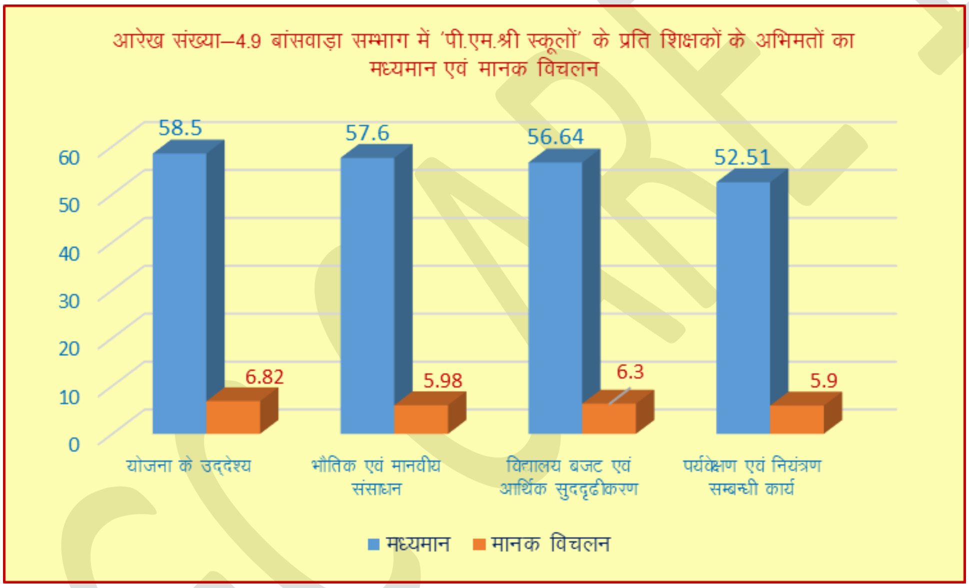

व्याख्या :

उपर्युक्त सारणी एवं आरेख संख्या 4.9 के अवलोकन करने पर क्षेत्रवार विश्लेषण इस प्रकार है –

1. **क्षेत्र–1** योजना के उद्देश्य : बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के शिक्षकों के अभिमतों के क्षेत्र 'योजना के उद्देश्य' क्षेत्र का मध्यमान 58.50 एवं मानक विचलन 6.82 प्राप्त हुआ। इससे ज्ञात होता है कि 'योजना के उद्देश्य' क्षेत्र के प्रति शिक्षकों का अभिमत है कि गुणवत्ता शिक्षा हेतु महत्वपूर्ण कदम है, छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करने आधुनिक शिक्षा प्रदान करने व राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुई है।
2. **क्षेत्र–2 भौतिक एवं मानवीय संसाधन** : बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के शिक्षकों के अभिमतों के क्षेत्र 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' क्षेत्र का मध्यमान 57.60 एवं मानक विचलन 5.98 प्राप्त हुआ। इससे ज्ञात होता है कि 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' क्षेत्र के प्रति शिक्षकों का अभिमत है कि विद्यार्थियों के अनुपात में सुरक्षित विद्यालय भवन व सुविधायुक्त फर्नीचर की व्यवस्था सम्भव हो सकी है।
3. **क्षेत्र–3 विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण** : बांसवाड़ा सम्भाग में पी.एम.श्री स्कूलों के शिक्षकों के अभिमतों के क्षेत्र 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण' क्षेत्र का मध्यमान 56.64 एवं मानक विचलन 6.30 प्राप्त हुआ। इससे ज्ञात होता है कि 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण'

क्षेत्र के प्रति शिक्षकों का अभिमत है कि सत्र के दौरान समय पर आर्थिक बजट की उपलब्धता से विद्यालय के बुनियादी ढांचे जैसे भवन, प्रयोगशालाएं, कम्प्यूटर, फर्नीचर, पानी, बिजली, लेब, खेल मैदान व पुस्तकालयों की सुविधाएं सुनिश्चित हुई।

4. **क्षेत्र–4 पर्यवेक्षण, प्रशिक्षण एवं अधिगम संवर्द्धन** कार्य : बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के शिक्षकों के अभिमतों' के क्षेत्र 'पर्यवेक्षण, प्रशिक्षण एवं अधिगम संवर्द्धन कार्य' क्षेत्र का मध्यमान 52. 51 एवं मानक विचलन 5.90 प्राप्त हुआ। इससे ज्ञात होता है कि 'पर्यवेक्षण, प्रशिक्षण एवं अधिगम संवर्द्धन कार्य' क्षेत्र के प्रति शिक्षकों का अभिमत है कि प्रभावी शिक्षण हेतु समय–समय पर पर्यवेक्षण, प्रशिक्षण नियमित रूप में कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। नवीनतम शिक्षण विधियों जैसे इंटरैक्टिव कार्यशालाओं और चर्चाओं के माध्यम से छात्रो का प्रभावी ढग से संलग्न करने के लिए प्रशिक्षण किया जाता है।

4.4.10 उदयपुर एवं बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति शिक्षकों के अभिमतो का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी संख्या–4.10

उदयपुर एवं बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति शिक्षकों के अभिमतो का तुलनात्मक अध्ययन

क्र. सं.	क्षेत्र	उदयपुर		बांसवाड़ा		'टी' मूल्य	.05 / .01 स्तर पर सार्थकता
		मध्यमान	प्रमाप विचलन	मध्यमान	प्रमाप विचलन		
1.	योजना के उद्देश्य	68.75	8.06	58.50	6.82	1.92	सार्थक नहीं
2.	भौतिक एवं मानवीय संसाधन	62.05	7.52	57.60	5.98	3.50	.01 स्तर पर
3	विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण	58.60	6.48	56.64	6.30	1.08	सार्थक नहीं
4	पर्यवेक्षण, प्रशिक्षण एवं अधिगम संवर्द्धन कार्य	59.15	6.90	52.51	5.90	3.08	.01 स्तर पर

स्वतंत्रता अंश (df) = 63 .05 स्तर पर सार्थकता मूल्य = 1.96
.01 स्तर पर सार्थकता मूल्य = 2.56

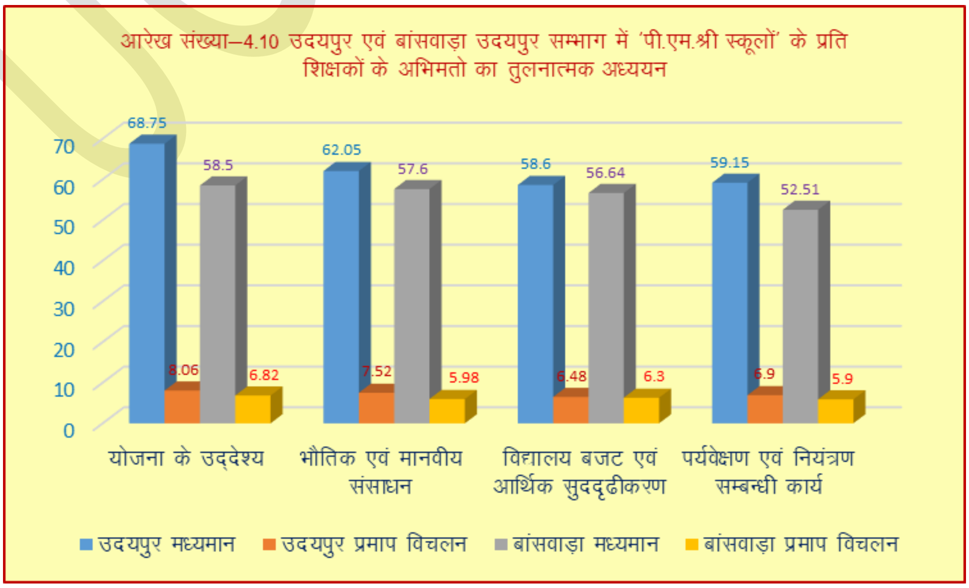

आरेख संख्या–4.10 उदयपुर एवं बांसवाड़ा उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति शिक्षकों के अभिमतो का तुलनात्मक अध्ययन

व्याख्या :

उपर्युक्त सारणी एवं आरेख संख्या 4.10 के अवलोकन करने पर क्षेत्रवार विश्लेषण इस प्रकार है –

1. **क्षेत्र–1** योजना के उद्देश्य : उदयपुर एवं बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के 'शिक्षकों के अभिमत' के क्षेत्र 'योजना के उद्देश्य' क्षेत्र का मध्यमान क्रमशः 68.75, 58.50 एवं मानक विचलन क्रमशः 8.06, 6.82 प्राप्त हुआ। मध्यमान के अन्तर की सार्थकता की जॉच के लिए टी–परीक्षण प्रयुक्त किया गया। टी–मान 1.92 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता के अंश *df*=63 के .01 स्तर के सारणी मान 2.56 से अधिक पाया गया। अतः दोनों समूह के शिक्षकों के अभिमत के प्रथम क्षेत्र के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। इससे ज्ञात होता है कि 'योजना के उद्देश्य' क्षेत्र के प्रति अध्यापकों का अभिमत है कि गुणवत्ता शिक्षा हेतु महत्वपूर्ण कदम है, छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करने आधुनिक शिक्षा प्रदान करने व राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुई है।

2. **क्षेत्र–2 भौतिक एवं मानवीय संसाधन** : उदयपुर एवं बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के 'शिक्षकों के अभिमत' के क्षेत्र 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' क्षेत्र का मध्यमान क्रमशः 62.05, 57.60 एवं मानक विचलन क्रमशः 7.52, 5.98 प्राप्त हुआ। मध्यमान के अन्तर की सार्थकता की जॉच के लिए टी–परीक्षण प्रयुक्त किया गया। टी–मान 3.50 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता के अंश *df*=63 के .01 स्तर के सारणी मान 2.56 से अधिक पाया गया। अतः दोनों समूह के शिक्षकों के अभिमत के द्वितीय क्षेत्र के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। इससे ज्ञात होता है कि 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' क्षेत्र के प्रति शिक्षकों का अभिमत है कि विद्यार्थियों के अनुपात में सुरक्षित विद्यालय भवन व सुविधायुक्त फर्नीचर की व्यवस्था सम्भव हो सकी है।

3. **क्षेत्र–3 विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण** : उदयपुर एवं बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के 'शिक्षकों के अभिमत' के क्षेत्र 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण' क्षेत्र का मध्यमान क्रमशः 58.60, 56.64एवं मानक विचलन क्रमशः 6.48, 6.30 प्राप्त हुआ। मध्यमान के अन्तर की सार्थकता की जॉच के लिए टी–परीक्षण प्रयुक्त किया गया। टी–मान 1.08 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता के अंश *df*=63 के .01 स्तर के सारणी मान 2.56 से कम पाया गया। अतः दोनों समूह के शिक्षकों के अभिमत के तृतीय क्षेत्र के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इससे ज्ञात होता है कि 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण' क्षेत्र के प्रति शिक्षकों का अभिमत है कि सत्र के दौरान समय पर आर्थिक बजट की उपलब्धता से विद्यालय के बुनियादी ढांचे जैसे भवन, प्रयोगशालाएं, कम्प्यूटर, फर्नीचर, पानी, बिजली, लेब, खेल मैदान व पुस्तकालयों की सुविधाएं पर्याप्त नहीं सुनिश्चित हुई।

4. **क्षेत्र–4 पर्यवेक्षण, प्रशिक्षण एवं अधिगम संवर्द्धन कार्य** : उदयपुर एवं बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी. एम.श्री स्कूलों के 'शिक्षकों के अभिमत' के क्षेत्र 'पर्यवेक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' क्षेत्र का मध्यमान क्रमशः 59.15, 52.51 एवं मानक विचलन क्रमशः 6.90, 5.90 प्राप्त हुआ। मध्यमान के अन्तर की सार्थकता की जॉच के लिए टी–परीक्षण प्रयुक्त किया गया। टी–मान 3.08 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता के अंश *df*=63 के .01 स्तर के सारणी मान 2.56 से अधिक पाया गया। अतः दोनों समूह के शिक्षकों के अभिमत के चतुर्थ क्षेत्र के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। इससे ज्ञात होता है कि 'पर्यवेक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' क्षेत्र के प्रति अध्यापकों का अभिमत है कि प्रभावी शिक्षण हेतु समय–समय पर पर्यवेक्षण, प्रशिक्षण नियमित रूप में कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। इससे विद्यार्थियों में अधिगम के प्रति रूचि एवं अधिगम संवर्द्धन में बढ़ौत्तरी हुई। नवीनतम शिक्षण विधियों जैसे इंटरैक्टिव कार्यशालाओं और चर्चाओं के माध्यम से छात्रो का प्रभावी ढग से संलग्न करने के लिए प्रशिक्षण किया जाता है।

शोध निश्कर्श :

1. **क्षेत्र–1** योजना के उद्देश्य : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के 'मानवीय संसाधनों' के क्षेत्र 'योजना के उद्देश्य' क्षेत्र 'योजना के उद्देश्य' क्षेत्र के प्रति अध्यापकों का अभिमत है कि गुणवत्ता शिक्षा हेतु महत्वपूर्ण कदम है, छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करने आधुनिक शिक्षा प्रदान करने व राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुई है।
2. **क्षेत्र–2 भौतिक एवं मानवीय संसाधन** : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' के क्षेत्र 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' क्षेत्र 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' क्षेत्र के प्रति अध्यापकों का अभिमत है कि विद्यार्थियों के अनुपात में सुरक्षित विद्यालय भवन व सुविधायुक्त फर्नीचर की व्यवस्था सम्भव हो सकी है।
3. **क्षेत्र–3 विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण** : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण' के क्षेत्र 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण' क्षेत्र 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण' क्षेत्र के प्रति अध्यापकों का अभिमत है कि सत्र के दौरान समय पर आर्थिक बजट की उपलब्धता से विद्यालय के बुनियादी ढांचे जैसे भवन, प्रयोगशालाएं, कम्प्यूटर, फर्नीचर, पानी, बिजली, लेबअ, खेल मैदान व पुस्तकालयों की सुविधाएं सुनिश्चित हुई।
4. **क्षेत्र–4 प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन** : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के 'प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' के क्षेत्र ' प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' क्षेत्र के प्रति अध्यापकों का अभिमत है कि प्रभावी शिक्षण हेतु समय–समय पर प्रशिक्षण नियमित रूप में कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। नवीनतम शिक्षण विधियों जैसे इंटरैक्टिव कार्यशालाओं और चर्चाओं के माध्यम से छात्रो का प्रभावी ढग से संलग्न करने के लिए प्रशिक्षण किया जाता है।

बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति शिक्षकों के अभिमतों का अध्ययन करना।

1. **क्षेत्र–1** योजना के उद्देश्य : बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के 'मानवीय संसाधनों' के क्षेत्र 'योजना के उद्देश्य' क्षेत्र क्षेत्र के प्रति अध्यापकों का अभिमत है कि गुणवत्ता शिक्षा हेतु महत्वपूर्ण कदम है, छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करने आधुनिक शिक्षा प्रदान करने व राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुई है।
2. **क्षेत्र–2 भौतिक एवं मानवीय संसाधन** : बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' के क्षेत्र 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' क्षेत्र क्षेत्र के प्रति अध्यापकों का अभिमत है कि विद्यार्थियों के अनुपात में सुरक्षित विद्यालय भवन व सुविधायुक्त फर्नीचर की व्यवस्था सम्भव हो सकी है।
3. **क्षेत्र–3 विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण** : बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण' के क्षेत्र 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण' क्षेत्र के प्रति अध्यापकों का अभिमत है कि सत्र के दौरान समय पर आर्थिक बजट की उपलब्धता से विद्यालय के बुनियादी ढांचे जैसे भवन, प्रयोगशालाएं, कम्प्यूटर, फर्नीचर, पानी, बिजली, लेबअ, खेल मैदान व पुस्तकालयों की सुविधाएं सुनिश्चित हुई।
4. **क्षेत्र–3 प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन** : बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के 'प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' के क्षेत्र ' प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' क्षेत्र क्षेत्र के प्रति अध्यापकों का अभिमत है कि प्रभावी शिक्षण हेतु समय–समय पर प्रशिक्षण नियमित रूप में कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। नवीनतम शिक्षण विधियों जैसे इंटरैक्टिव कार्यशालाओं और चर्चाओं के माध्यम से छात्रो का प्रभावी ढग से संलग्न करने के लिए प्रशिक्षण किया जाता है।

उदयपुर एवं बांसवाड़ा उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति शिक्षकों के अभिमतो का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1. **क्षेत्र–1** योजना के उद्देश्य : उदयपुर एवं बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के 'मानवीय संसाधनों' के क्षेत्र 'योजना के उद्देश्य' क्षेत्र के प्रति अध्यापकों का अभिमत है कि गुणवत्ता शिक्षा हेतु महत्वपूर्ण कदम है, छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करने आधुनिक शिक्षा प्रदान करने व राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुई है।
2. **क्षेत्र–2 भौतिक एवं मानवीय संसाधन** : उदयपुर एवं बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' के क्षेत्र 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' क्षेत्र के प्रति अध्यापकों का अभिमत है कि विद्यार्थियों के अनुपात में सुरक्षित विद्यालय भवन व सुविधायुक्त फर्नीचर की व्यवस्था सम्भव हो सकी है।
3. **क्षेत्र–3 विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण** : उदयपुर एवं बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी. एम.श्री स्कूलों के 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण' के क्षेत्र 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण' क्षेत्र के प्रति अध्यापकों का अभिमत है कि सत्र के दौरान समय पर आर्थिक बजट की उपलब्धता से विद्यालय के बुनियादी ढांचे जैसे भवन, प्रयोगशालाएं, कम्प्यूटर, फर्नीचर, पानी, बिजली, लेबअ, खेल मैदान व पुस्तकालयों की सुविधाएं सुनिश्चित हुई।
4. **क्षेत्र–3 प्रिशक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन** : उदयपुर एवं बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम. श्री स्कूलों के 'प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' के क्षेत्र ' प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' क्षेत्र के प्रति अध्यापकों का अभिमत है कि प्रभावी शिक्षण हेतु समय–समय पर प्रशिक्षण नियमित रूप में कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। नवीनतम शिक्षण विधियों जैसे इंटरैक्टिव कार्यशालाओं और चर्चाओं के माध्यम से छात्रो का प्रभावी ढग से संलग्न करने के लिए प्रशिक्षण किया जाता है।

सन्दर्भ :

1. पी.एम.श्री स्कूल योजना रिपोर्ट–2022
2. बंडुरा, अल्बर्ट (2006): किशोरों की आत्म–प्रभावकारिता विश्वास, 307–337, सूचना आयु प्रकाशन, उत्तरी कैरोलिना।
3. जॉन डब्ल्यू बेस्ट (2005): रिसर्च इन एजुकेशन (10वां संस्करण) पियर्सन पब्लिशिंग कंपनी, आईएसबीएन–13: 978–0205458400, नई दिल्ली।
4. कौल लोकेश (2009): मेथडोलॉजी ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, चौथा संस्करण, आईएसबीएन: 9788125927969, विकास प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. नवानी, डी। (2013)। लगातार और व्यापक रूप से बच्चों का मूल्यांकन, आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक। टवस.48 (2).33–40, अम्बेगांव, एमएच।
6. एनसीईआरटी (2005): सतत और व्यापक मूल्यांकन, एनसीएफ (2005), नई दिल्ली।
7. एनसीईआरटी (1988): प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या – एक रूपरेखा (संशोधित संस्करण), प्रकाशन विभाग में प्रकाशित, सचिव, एनसीईआरटी, नई दिल्ली।
8. एनसीईआरटी (2000): स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या, प्रकाशन विभाग में प्रकाशित, सचिव, एनसीईआरटी, नई दिल्ली।
9. राजीव गांधी राष्ट्रीय युवा और विकास संस्थान (2014)य इंडियन जर्नल ऑफ लाइफ स्किल्स एजुकेशन, तमिलनाडु।
10. रक्षिंदरकौर (2013) सतत और व्यापक मूल्यांकन प्रणाली की प्रभावशीलता पर शिक्षकों और विद्यार्थियों की धारणाय सीखने की शिक्षाशास्त्र (2), 50–56, आईएसएसएन: 2320–9526, भारत में मुद्रित कृष्णा एजुकेशनल सेंटर, हिमाचल प्रदेश।
11. राव मंजुला पी. (2001): प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के मूल्यांकन अभ्यास पर सतत और व्यापक मूल्यांकन प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रभावशीलता – तमिलनाडु में एक डीपीईपी अनुसंधान अध्ययन, आरआईई, मैसूर।

12. राव मंजुला पी. और एस.पी. कुलकर्णी (2002): डिमॉन्स्ट्रेशन स्कूल, आरआईई, मैसूर में प्राथमिक स्तर पर स्कूल आधारित मूल्यांकन प्रणाली का विकास और कार्यान्वयन।
13. राव, मंजुला पी एट अल। (1998): शिक्षकों के कक्षा अभ्यास पर SOPT प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रभाव–दक्षिणी राज्यों में एक अध्ययन, RIE (NCERT), मैसूर।
14. Annual Status of Education Report 2022),
15. https://dsel.education.gov.in/pmshri-schools-list
16. https://www.rewariyasat.com/business/what-pm-shree-school-scheme-let-know-what-benefits-students-will-get-102505
17. https://hindi.careerindia.com/news/what-is-pm-shri-yojana-007357.html?story=3
18. https://www.aajtak.in/india/news/story/what-is-pm-shri-and-how-it-will-change-education-in-14500-schools-across-india-ntc-1533363-2022-09-08

UGC CARE 1